थामें रहे एक दूजे का हाथ, बना रहे साथ हमारा हमेशा,

हर पल आखिरी दम तक, विश्वास डोर ना हो कमजोर,

स्नेह का यही बंधन ही तो देता है, रिश्तों को मजबूती,

खड़े रहेंगे बस साथ-साथ, हर मंजिल के उतार चढ़ाव में,

यूं ही बहते रहना है, बस जीवन सफ़र के इस सागर में,

रूठने मनाने का सिलसिला 'आजीवन' सदा बरकरार रहे,

कोई तोड़ नहीं सकता इस सांठ-गांठ को, मिला है वरदान,

ईश्वर से यही प्रार्थना, हर साल बेशुमार खुशियों से रहे भरा,

काया सुख- समृद्धि से भरा रहे जीवन हमारा,

ख़्वाहिश ऐ जिन्दगी से बस 'इतनी सी' ।

गीतांजलि सक्सेना नवंबर 16.11.**2022**